मेरे माता जी और पिता जी के
चरणों में
मेरा प्रथम पुष्प
अर्पित

प्राक्कथन

प्राक्कथन

'कहानी हिंदी साहित्य जगत्' की एक सशक्त विधा मानी जाती है। कम समय में मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान की पूँजी लुटाने वाले इस विधा को हिंदी साहित्य के आरंभ काल से ही अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हिंदी साहित्य में काव्य के बाद कहानी विधा का नाम आता है। इसका इतिहास बड़ा प्राचीन और संपन्न रहा है। हिंदी के लगभग सभी साहित्यकारों को कहानी लेखन के प्रति मोह और आंतरिक इच्छा होती ही है इसलिए तो अधिकांश कहानीकारों ने अपने साहित्य कृतियों की सूचियों में कहानियों का भी समावेश किया है।

साहित्य के प्रत्येक विधा में अपनी प्रतिभा की झलक दिखाने वाली चित्रा जी ने कहानी लेखन में अत्याधिक सफलता प्राप्त की है। वे एक सिद्धहस्त लेखिका हैं। हिंदी साहित्य विकास में उनका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका साहित्य किसी भी विधा में हो वह मन को छू ही लेता है। पाठकों के सामने वास्तविकता को अत्यंत निर्भिकता एवं कठोरता से रखने के अंदाज ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। मेरे एम्.फिल. के विषय चयन के दौरान मेरे शोध निर्देशक डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के सहयोग से ही मेरा परिचय चित्रा जी के साहित्य से हो गया और वहाँ से लेकर आज तक हमारा परिचय बढ़ता ही गया। चित्रा जी अत्यंत संवेदनशील, कोमल स्वभाव की लेखिका हैं। उनके कहानियों में समाज और समाजेतर समस्याओं और अव्यवस्था के प्रति रोष है। उनके कहानियों से दृष्टिगोचर होता विद्रोह मुझे यही सोचने के लिए विवश करता गया कि एक कोमल हृदया लेखिका का वैचारिक पक्ष इतना कठोर क्यों है? चित्रा जी के साहित्य कृतियों, उनके जीवन के बारे में जितना मेरा अध्ययन बढ़ता गया उतनी ही तीव्रता से मुझे कुछ प्रश्न परेशान बनाते चले गए। चित्रा जी का स्वभाव, साहित्य कृतियाँ, अन्य सामाजिक गतिविधियाँ आदि के कारण मेरे मन में उठते प्रश्न इस प्रकार हैं -

1) चित्रा जी के अत्यंत कोमल, संवेदनशील तथा कलाप्रिय हृदय में इतना विद्रोह क्यों है?

2) साहित्य समाज का दर्पण होता है। क्या हमारे समाज के नारी वर्ग में इतना साहस निर्माण हो रहा है, ज्यों सामाजिक, पारिवारिक रूढ़ियों का विरोध विद्रोह करने के लिए प्रेरित हो गई है?
3) नारी के विद्रोही पक्ष के साथ चित्रा जी ने उसके कोमल पक्ष के प्रति अनदेखा तो नहीं किया?
4) नारी-विद्रोह को केवल अपने जिद्द और प्रतिशोध को लक्ष्य में रखकर चित्रा जी ने निर्माण तो नहीं किया?
5) चित्राजी के साहित्य का केंद्रस्थान क्या है?
6) पाठकों के सामने नारी-विद्रोह का पक्ष लाकर चित्रा जी क्या साबित करना चाहती है?
7) विवेच्य कहानियों की नारी का विद्रोह किस स्तर का है?
8) विवेच्य कहानियों की समस्या केवल नारी तक ही सीमित है?
9) चित्रा जी नारी-विद्रोह संदर्भ में किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है?
10) नारी-विद्रोह और चित्रा मुद्गल की कहानियों का क्या स्थान है?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान के दौरान प्राप्त होते गए। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के उपसंहार में इन उत्तरों का समावेश किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय : चित्रा मुद्गल के जीवन एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचय

साहित्यकार के साहित्य पर उसके जीवन का अत्यंत गहरा प्रभाव होता है। अत: किसी भी साहित्यकार के साहित्य को भली-भाँति जानने के लिए उसके जीवन को जानना सर्वथा आवश्यक होता है। इसी बात का अनुसरण करते हुए मैंने चित्रा जी के जीवन एवं साहित्य का अध्ययन कर उनका संक्षिप्त परिचय प्रथम अध्याय में दिया है। चित्रा जी के मुझे प्राप्त साहित्य एवं जीवन के जानकारी के आधार पर उनके रचनाओं, पुरस्कारों का तथा उनके व्यक्तिगत जीवन को चित्रित किया है। अध्याय के अंत में ही प्राप्त निष्कर्ष का भी समावेश किया है।

द्वितीय अध्याय - विवेच्य कहानियों का वस्तुगत विवेचन

चित्रा जी की कहानियों का विषयानुसार वर्गीकरण किया है। उनकी कहानियाँ किस-किस विषयों से संबंधित हैं इसको इस अध्याय द्वारा प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्रस्तुत विषय से प्राप्त निष्कर्ष को दर्शाया गया है।

तृतीय अध्याय - विवेच्य कहानियों में नारी-विद्रोह : स्वरूपगत विवेचन

इस अध्याय में चित्रा जी के कहानियों में विद्रोह प्रकट करनेवाली नारियों के विविध रूपों को दर्शाया है। पारिवारिक जीवन यापन करते समय अपने 'स्व' तथा मूलभूत मानवीय अधिकारों के लिए नारी का विद्रोह यहाँ दृष्टव्य है। अध्याय के अंत में ही प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य कहानियों में नारी-विद्रोह : दाम्पत्य जीवन संदर्भ

इस अध्याय में चित्रा जी के कहानियों से दृष्टव्य दाम्पत्य जीवन तथा अपने अधिकारों के लिए पति, उसके विचार, परंपरा के विरूद्ध विद्रोह करने वाली पत्नी रूप में नारी का विद्रोह चित्रित किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए गए हैं।

पंचम अध्याय - विवेच्य कहानियों में नारी-विद्रोह : सामाजिक जीवन संदर्भ

इस अध्याय में सामाजिक जीवन संदर्भ में नारी-विद्रोह प्रस्तुत किया है। अपने सामाजिक जीवन में समाज द्वारा होने वाले अन्याय के विरूद्ध वह विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। अध्याय के अंत में प्रस्तुत अध्याय का निष्कर्ष दिया है।

उपसंहार :

अंत में उपसंहार दिया है, इसमें सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सारांश रूप में प्रस्तुत किया है। इसके उपरांत संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

शोध-प्रबंध की मौलिकता :

मेरा शोध-प्रबंध ''नारी विद्रोह के संदर्भ में चित्रा मुद्गल की कहानियों का मूल्यांकन'' ('केंचुल' और 'चर्चित कहानियाँ' के विशेष संदर्भ में) विषय पर लिखा गया है। ~~अत:~~

मेरे शोध-प्रबंध की मौलिकता इस प्रकार है -

1) चित्रा जी के कहानियों में नारी-विद्रोह को लक्ष्य करते हुए हिन्दी अनुसंधान क्षेत्र में पहली बार संपन्न हुआ है।

2) प्रस्तुत शोध-प्रबंध नारी जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करता है।

3) इस शोध-प्रबंध के जरिए चित्रा जी ने नारी जीवन में आए बदलाव को चित्रित करते हुए उसकी अस्मिता के प्रति सजगता का सूक्ष्मता से विवेचन किया है।

* * * *

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मुझे मेरे स्वकीय, गुरूजन आदि के साथ जिन ज्ञात, अज्ञात हितचिंतकों की साह्यता प्राप्त हुई है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ।

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध लेखन में शुरूआत से लेकर अंत तक अपना मौलिक मार्गदर्शन प्रदान करने वाले मेरे श्रद्धेय गुरूवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के प्रति अत्यंत ऋणी हूँ। आपके सफल निर्देशन का ही फल है कि मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न कर सकी हूँ।

मेरे इस कार्य में साथ देने वाले हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के अन्य अध्यापकों का भी सहकार्य प्राप्त हुआ है। अत: मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझती हूँ। **डॉ. शोभा निंबाळकर, डॉ. आशा मणियार, डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी** तथा **डॉ. सुनिलकुमार लवटे** तथा **श्री. अशोक मरळे, सुकेशनी पाटील, शैलजा कांबळे, सुजाता पाटील, बेबी खिलारे, अनघा तोडकरी** आदि का मौलिक सहकार्य मेरे इस कार्य में साहयक सिद्ध हुआ है। अत: मैं इनके साह्यता से अत्यंत आभारी हूँ।

मेरे जीवन का अविभाज्य पक्ष मेरा परिवार रहा है। उनके आशिर्वाद एवं सहयोग के बिना मैं यह कार्य संपन्न नहीं कर पाती। मेरे इस कार्य में सर्वथा सहयोग मेरे पिताजी **श्री. नागनाथ जाधव**, मेरी माता **सौ. शशिकला जाधव**, दादी **काशीबाई**, नानी **लक्ष्मीबाई**, मेरी बहन **आश्लेषा** और मेरा भाई **माधव** का है। इनके अतिरिक्त मेरे स्वर्गवासी दादाजी **महादू जाधव**, नानाजी **गिरमल कांबळे** तथा मेरे मामाओं का भी मुझे अत्यंत सहयोग प्राप्त हुआ है। उनके आशिर्वाद और प्रेरणा के कारण ही मैं यह शोध-प्रबंध का कार्य सफतापूर्वक संपन्न कर सकी हूँ। अत: मैं इनके स्नेहल कृतज्ञता में रहना अपना भाग्य समझती हूँ।

एम्.फिल. के अध्ययन के लिए अपना परिवार और गाँव छोड़कर इतनी दूर आने पर मुझे मेरी सबसे करीबी सहेली **अनु** और उसके परिवार द्वारा ढेर सारा प्यार एवं प्रोत्साहन मिला। अत: मैं उनकी ऋणी हूँ इस बात का मुझे अत्याधिक हर्ष है।

मेरे संशोधन कार्य में मेरी सहेलियों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। **कमल कांबळे, सविता गायकवाड, शीला देशमुख, शैलजा गवळी, विद्या देसाई, रूपाली चव्हाण, स्मिता ढावरे** तथा **समिना नायकवडी** इनके सहयोग को मैं कभी भूल नहीं सकती। अत: इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

साथ ही मैं मेरे प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति के लिए सहयोग प्रदान करने वाले **शिवाजी विश्वविद्यालय** के **हिंदी विभाग** के वरिष्ठ लेखनिक **श्री. कोळेकर,** विभाग सेवक **चांदणे मामा** का भी योगदान प्राप्त हुआ है। अत: मैं इनकी आभारी हूँ। मेरे इस संशोधन कार्य में सबसे अधिक योगदान **बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, महावीर महाविद्यालय** का है। वहाँ के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग के कारण मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

मेरे इस प्रबंध का टंकलेखन करने वाली **अक्षर टायपिंग** की संचालिका **सौ. पल्लवी सावंत** की भी आभारी हूँ। मेरे शोध-प्रबंध के कार्य में जिन ज्ञात, अज्ञात व्यक्तियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहकार्य प्राप्त हुआ उन सबके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

Jadhav A.

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 30 जून 2007

(**कु. अर्चना नागनाथ जाधव**)